संपादक के नोट

मैं प्रभु येशु मसीह के नाम से आप सभी का अभिवादन करती हूँ। हम इस वर्ष के आखरी महीने में आ गए हैं। यह एक महीना है जिसकी हम सभी प्रतीक्षा करते हैं; यह एक आनंद और खुशी का महीना है जबकी हम उत्सव मनाते हैं येशु मसीह के पहले आगमन का इस दुनिया में।

मत्ती १:१ – अब्राहाम के वंशज दाऊद की सन्तान येशु मसीह की वंशावली की पुस्तक।

येशु मसीह न केवल अब्राहम की पीढ़ी का है, लेकिन वह दाऊद का सन्तान भी है।

प्रभु के दूत ने येशु के जन्म की भविष्यवाणी की लूका १:३२–३३ में – वह महान होगा, और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा। प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसे देगा, और वह याकूब के घराने पर अनन्तकाल तक राज्य करेगा, और उसके राज्य का अन्त न होगा।

बहुतों को जिन्हें अवश्यक्ता थी उनके तकलीफ़ों के हल के लिए, येशु को दाऊद के संतान कहकर बुलाया।

यहूदियों को भी पता था कि मसीहा दाऊद के वंश से आएगा। मत्ती ९:२७–३० – जब येशु वहाँ से आगे बढ़ा तो दो अंधे उसके पीछे यह चिल्लाते और पुकारते हुए चले, "हे दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर!" और जब वह घर में प्रवेश कर चुका तो वे अंधे उसके पास आए। येशु ने उनसे कहा, "क्या तुम विश्वास करते हो कि मैं यह कर सकता हूँ?" उन्होंने उससे कहा, "हां, प्रभु।" तब उसने यह कहते हुए उनकी आंखों को स्पर्श किया, "तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिए हो जाए।" और उनकी आंखें खुल गईं। येशु ने कड़ी चेतावनी देते हुए उनसे कहा, "देखो, यह किसी को न बताना।"

चमत्कार और लक्षण देखने पर जिसका प्रदर्शन येशु ने किया, वे आश्चर्यचकित थे और मत्ती १२:२३ में कहा – इस पर सारा जनसमूह चकित होकर कहने लगा, "क्या यह मनुष्य दाऊद की सन्तान हो सकता है?" यहां तक कि एक गैर यहूदी महिला येशु के पास आई और प्रकाशण द्वारा उसे दाऊद का पुत्र कहा। मत्ती १५:२२ – और देखो, उस प्रदेश की एक कनानी स्त्री आई और चिल्लाकर कहने लगी, "हे प्रभु, दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर। मेरी पुत्री बुरी तरह से दुष्टात्मा–ग्रस्त है।" जब येशु एक बड़ी भीड़ के साथ यरूशलेम आ रहा था, कईयों ने सड़क पर उनके कपड़े फैलाए, और

अन्यों ने पेड़ों से ड़ालियाँ काटकर सड़क पर फैला दिया। तब जो भीड़ आगे चली थी और जो पीछे थे चिल्लाकर कहने लगे, "दाऊद के सन्तान को होसान्ना।"

क्यों येशु को दाऊद का पुत्र कहा जाता है? राजा दाऊद प्रभु के लिए एक मंदिर का निर्माण करने के लिए इच्छित था; प्रभु इससे बहुत खुश हुआ और दाऊद के साथ एक वाचा बनाया कि वह उसके लिए एक घर का निर्माण करेगा, और यह की उसका सिंहासन हमेशा के लिए बना रहेगा।

तब राजा दाऊद ने प्रभु को धन्यवाद दिया और कहा : इसलिए, अब तू अपने दास के घराने को आशिष देने के लिए प्रसन्न हो कि वह तेरे सामने सर्वदा बना रहे क्योंकि हे परमेश्वर, तू ही ने यह कहा है। तेरी आशिष से तेरे दास का घराना सर्वदा आशीषित बना रहे।" येशु ने अपनी सेविकाय लगभग तीस साल की उम्र में शुरू किया, यूसुफ के पुत्र होने के नाते (ऐसे माना जाता था)। येशु यूसुफ का पुत्र नहीं था, लेकिन पवित्र आत्मा के द्वारा उत्पन्न किया गया था। यूहन्ना ३:६ – जो शरीर से जन्मा है वह शरीर है, और जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है। येशु के सांसारिक आवश्यकताओं की देखभाल करने के लिए, यूसुफ एक सांसारिक पिता के रूप में दिया गया था। यह रहस्य, आम लोगों को समझ में नहीं आता। इसलिए, सभी यीशु के मुंह से निकलने वाले अनुग्रह के शब्दों पर अचम्भा हुए। लूका ४:२२ – सब लोगों ने उसकी प्रशंसा की और उसके होठों से अनुग्रह के जो वचन निकल रहे थे, उन पर अचम्भा किया; और कहने लगे, "क्या यह यूसुफ का पुत्र नहीं?" फिलिप्पुस ने नतनएल को पाकर उस से कहा, "जिसके विषय में मूसा ने व्यवस्था में, और नबियों ने भी लिखा है, वह हमें मिल गया है, अर्थात यूसुफ का पुत्र, नासरत का येशु।" कई लोग यह जानकर कि येशु यूसुफ का पुत्र था, नाराज हुए और यहूदियों ने बड़बड़ाना शुरू किया। यूहन्ना ६:४२ – और वे कहने लगे, "क्या यह यूसुफ का पुत्र, येशु नहीं, जिसके माता पिता को हम जानते हैं? अब वह कैसे कहता है, कि मैं स्वर्ग से उतरा हूँ?" मरकुस ६:३ – क्या वह वही बढ़ई नहीं जो मरियम का पुत्र है और जो याकूब, योसेस, यहूदा और शमौन का भाई है? क्या उसकी बहिनें यहां हमारे बीच में नहीं?" और लोगों ने उसके कारण ठोकर खाई। हाँ, परमेश्वर ने एक अनोखा और अद्भुत तरीके से मरियम के गर्भ में यीशु के लिए एक जगह तैयार किया। स्वर्गदूत ने उस से कहा, "पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा और परमप्रधान का सामर्थ तुझ पर आच्छादित होगा। इसी कारण वह पवित्र पुत्र जो उत्पन्न होगा, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा। वह महान होगा, और परपम्रधान का पुत्र

कहलाएगा। प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसे देगा। जबसे येशु सर्वोच्च का पुत्र कहा गया है, उसने हमारे लिए सर्वोच्च आशिषें लाया है। क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया...क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न होगा, हमें एक पुत्र दिया जाएगा। इसलिए हम बहुतायत से क्रिसमस का उत्सव मना सकते है और परमप्रधान के नाम से एक–दूसरे को बधाई दे सकते है।
मैं अपने सभी पाठकों और रोस ऑफ़ शेरोन चर्च के सदस्यों को एक बहुत ही आनंदमय और आशीषित क्रिसमस की बधाई देती हूँ।

पास्टर सरोजा म.

प्रभु के साथ जुड़े रहें हमारे जीवन की यात्रा के अंत तक।

उत्पत्ति ४१:५२ – और दूसरे का नाम उसने एप्रैम रखा। उसने कहा, "क्योंकि परमेश्वर ने मेरे दुख भोगने के देश में मुझे फुलाया–फलाया है।" ये अंत के समय हैं और हम जानते हैं कि यह मसीह के विरोधी का समय है। इस संसार में, हर सभा, लोगों द्वारा दौरा किया जाएगा जो एप्रैम, मनश्शे और एलिजा होने का दावा करते हैं। वे किसी अन्य रूप में दौरा कर सकते हैं, चाहे आत्मा के रूप में या किसी भी अन्य रूप में लेकिन वे दौरा करेंगे। यह मलाकी ४:५ में लिखा है – देखो, यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहले मैं तुम्हारे पास एलिय्याह नबी को भेजूंगा। मसीह के विरोधी के समय के दौरान, परमेश्वर अपने लोगों को बचाने के लिए अपने चेलों एप्रैम, मनश्शे, एलिजा को भेजेगा। परमेश्वर यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के आत्मा को भी भेजेगा हमारे मध्य हमारी सेवा के लिए। याकूब के जीवन को हम जानते हैं कि उसके दो पोते थे यूसुफ़ के द्वारा – मनश्शे और एप्रैम। याकूब ने दोनो को बुलाया उन्हे आशीष देने के लिए, उस समय जब उसने उसके दाहिने हाथ को यह सोचकर रखा कि वह बड़ा बेटा है, उसने छोटे बेटे को आशिषित किया। इस प्रकार बड़े बेटे मनश्शे का जन्म–अधिकार छोटे बेटे एप्रैम को स्थानांतरण हो गया। इसलिए जैसे पवित्र–शास्त्र में लिखा गया है, वह जो प्रथम है, अनतिम होगा, और जो अनतिम हैं, वह प्रथम होगा, सच हुआ। हम पढ़ें मत्ती १९:३० – परन्तु अनेक जो प्रथम हैं अनतिम होंगे, और जो अनतिम हैं, वे प्रथम होंगे। अब यहाँ हम देख़ते हैं कि यह सत्य है, क्या होता है उनको जो आदी से क्रिस्ती है। हम देखते हैं कि इन लोगों के कार्य क्या है। प्रेरितों के काम ६:२–३ कहता है – बारहों ने चेलों की मण्डली को बुलाकर कहा, "हमारे लिए यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर के वचन को छोड़कर खिलाने–पिलाने की सेवा करें। इसलिए, हे भाइयो, अपने में से सात सच्चरित्र पुरूषों को चुन लो जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों कि हम इस कार्य का संचालन उनके हाथों में सौंप दें। इन लोगों को दूसरे लोगों का खाना परोसने का कार्य सौंपा गया था। जब कि जो अन्य जाति से बुलाए गए थे; उदा – मच्छवारे और जीवन के अनेक मार्गों के लोग, परमेश्वर ने उन्हे उसके प्यार से भरा, उन्होने प्रभु की सेवा दिन–रात की, जीवन के सारे दुष्ट के विरूद्ध लड़ाई की और जबरदस्ती से परमेश्वर के राज्य में प्रवेश

किया। जैसे कि वचन कहता है वें जो प्रथम हैं, अनतिम होंगे, और जो अनतिम हैं, वें प्रथम होंगे। इस प्रकार, जो क्रिस्ती जन्म के थे उन्हे लोगों की सेवा का कार्य दिया गया। लेकिन जो अन्य जाति से बुलाए गए थे, वें प्रभु के लिए दिन–रात सेवा करते थे, परमेश्वर के आत्मा को प्राप्त किए उनके कार्यों के भेट के रूप में और जबरदस्ती परमेश्वर के राज्य में प्रवेश किए। हम पढ़ते हैं मत्ती ८:१०–१२ – जब येशु ने यह सुना तो अचम्भा किया और अपने पीछे आने वालों से कहा, "मैं तुमसे सच कहता हूँ, मैंने इस्राएल के किसी व्यक्ति में भी ऐसा बड़ा विश्वास नहीं पाया। मैं तुम से कहता हूँ कि पूर्व और पश्चिम से बहुत से लोग आकर अब्राहाम, इसहाक और याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में भोजन करने बैठेंगे, परन्तु राज्य के सन्तान बाहर अन्धकार में फेंक दिए जाएंगे; और वहां रोना और दात पीसना होगा।" जो अन्य जाति से आए वें थे जिन्होंने प्रभु परमेश्वर से बहुत प्यार किया, जिन्होंने प्रभु के लिए दिन और रात महनत किया और स्वर्गीय राज्य पहुँच गए और अब मेज पर अब्राहाम, इसहाक और याकूब के साथ बैठे हैं और जो कहते थे "हम पहले हैं, हम पहले हैं", उन्हे परमेश्वर ने अंधकार और नरक के आग में फैंक दिया। इसका कारण क्या है? हमें याद रखना है उनको जिन्होंने परमेश्वर के राज्य को जीतने के लिए। इसलिए यह हमारे लिए भी ज़रूरी हैं कि हम प्रभु के लिए महनत करें। परमेश्वर का प्रतिफल उनके लिए नहीं जो प्रभु के लिए एक दिन के लिए कार्य करते हैं, लेकिन शांति, आनंद और खुशी उन्हे दिया जाता है जो लगातार प्रभु परमेश्वर के लिए महनत करते हैं। हमारा हर व्यवहार, विचार और कार्य केवल परमेश्वर के लिए महिमा लाना चाहिए। इसहाक का पहला पुत्र एसाव था, लेकिन एसाव ने अपना जन्म–अधिकार को एक निवाले खाने के लिए अपने भाई याकूब को बेच दिया। याकूब का पहला पुत्र रूबेन था, उसे उसके पिता का अधिकार मिलना चाहिए था पहलौटा होने के कारण। लेकिन उसके पापी कार्यों के कारण (वह अपने पिता के रखैलों के साथ अवैध संबंध रखता था) उसने अपना जन्म–अधिकार खो दिया यूसुफ़ पर। यह हुआ क्योंकि रूबेन लापर्वाह था, उसने सोचा कि व्यतिक्रम से वह उसके जीवन में सबकुछ पा सकता है। इस प्रकार हमारे जीवनों में हमे भी लापर्वाही कभी नहीं करना है और हमारे जीवनों को निर्भय रीति से नहीं जीना हैं। परमेश्वर के बच्चों को हमेशा याद रखना हैं कि हमारा जीवित और शक्तिमान परमेश्वर कभी सोता या ऊँगता नहीं है। वह हम पर हर समय दृष्टि रखता है। हमारे छोटी–से–छोटी गलती भी उसे दुखी करता है। प्रकाशितवाक्य ३:११ कहता है – मैं शीघ्र आनेवाला हूँ। जो कुछ तेरे पास है,

उसे थामे रह कि कोई तेरा मुकुट छीन न ले। हमे एसाव या रूबेन जैसा नहीं होना हैं, प्रभु ने जो आत्मा हमारे भीतर दिया है, हमे उसे पकड़े रहना हैं और मज़बूत होना हैं। परमेश्वर ने हमें सिक्के और गुणों के अनुसार दिया है, हमे सीखना है उसका पूर्ण रूप से इस्तमाल करना और सीखना है उसे दुगना करना। परमेश्वर फिर आएगा और वह उन सिक्कों का हिसाब करेगा जो उसने हमे दिया है। इस लिए हमें अपने सिक्कों को जकड़े रखना हैं और उसे पूर्ण तरीके से इस्तमाल करना हैं। प्रकाशितवाक्य ३:१६ कहता है – इसलिए कि तू गुनगुना है, न ठण्डा है न गर्म, मैं तुझे अपने मुंह से उगल दूंगा। जब हम गरम नहीं हैं ना हि थंड़े हैं लेकिन ठण्डा–गरम हैं परमेश्वर हमे उसके मूँह से थूँक देगा। हमें लगता है कि हम इस कलिसिया के सदस्य हैं और कलिसिया में केवल नाम के लिए। ऐसे लोगों से परमेश्वर घृणा करता है, उन्हे वह अपने मूँह से थूँक देगा। हमे प्रभु के लिए गरम रहना हैं, इस तरह उसने उसके आग को हमारे भीतर दिया है। जब कोई हमारी कलिसिया या पास्टर के विरूद्ध बात करता है, तब हमे ढ़ृढ़ता से खड़े रहना हैं उनके लिए और उनका समर्थन करते हुए हमे बात करना हैं। हमे प्रभु के लिए आग होना चाहिए, उसके लोगों के लिए, उसके वचन के लिए, उसके कलिसिया के लिए। परमेश्वर हम पर दृष्टि रखता है इसलिए भले हि हम आखरी हैं हम पहले हो जाएँगे। जो पहले हैं वह आखरी होंगे कारण यह है कि हम न गरम न ठण्ड़े हैं प्रभु के लिए। जो अन्य–जाति में से चुने गए हैं वे कोशिष करते हैं प्रभु के लिए बहुत महनत करते हुए वें प्रभु को खोजते हैं कहाँ भी और कभी भी जब वे कर सकते हैं वें यहाँ–वहाँ भागते हैं परमेश्वर के वचन को सुनने के लिए इस तरह वें परमेश्वर के स्वर्गीय राज्य पहुँचते हैं। वें वह लोग हैं जिन्हें विशेषाधिकार मिलता है अब्राहाम, इसहाक और याकूब के साथ बैठने के लिए और योग्य बनने के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए। लेकिन जो क्रिस्ती रूप में जन्में हैं जिन्होंने परमेश्वर के प्यार को हलका माना है आज अंधकार में हैं और नरक के आग में ड़ाले गए और उनके दाँतों को पीस रहे हैं। उत्पत्ति ४१:५२ – और दूसरे का नाम उसने एप्रैम रखा। उसने कहा, ष्क्योंकि परमेश्वर ने मेरे दुख भोगने के देश में मुझे फुलाया–फलाया है।" अब्राहाम का अर्थ क्या है? इसका अर्थ है, ष्बहुगुनित हो, फैलो, बढ़ो।" इसलिए उसका नाम अब्राहाम रखा गया। परमेश्वर की इच्छा हमारे लिए यही है अब इस अंत के समय में – "बहुगुनित हो, फैलो ब़ढ़ो।" यशायाह ५४:३ – क्योंकि तू दाहिने और बाएं फैलेगी, और तेरे वंशज जाति जाति के अधिकारी होंगे, और वे इन उजाड़ नगरों को फिरसे बसाएंगे। परमेश्वर के बच्चों के

लिए यह महान आशीष है। यह वचन अब्राहाम के बच्चों का है। अब्राहाम का मतलब है "बहुगुनित हो, फैलो और बढ़ो।" सारे तरफ़ से। अंत के समयों, परमेश्वर चाहता है कि उसकी आत्मा सारे मानव जाति पर उण्ढ़ले ताकि वे बहुगुनित हो, फैले और बढ़ें। जैसे याकूब अंत के समय के करीब आया उसके जीवन का, उसकी इच्छा थी कि उसके बेटे यूसुफ़ को देखे, यह बहुत तीव्र था, उत्पत्ति ४६:२९–३० – तब यूसुफ अपना रथ जुतवाकर अपने पिता इस्राएल से भेंट करने को गोशेन देश को गया, और जैसे ही वह निकट पहुंचा, वह उसके गले से लिपट गया और उसके गले से लिपटे हुए बहुत देर तक रोया। तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा, "अब चाहे मैं मर जाऊँ, क्योंकि अब तो मैंने तेरा मुख देख लिया है, कि तू अभी तक जीवित है।" यह यात्रा याकूब के जीवन का उसका अंतिम यात्रा था। इस यात्रा के समय उसने सब कुछ लिया जो उसके साथ था। दाऊद कहता है भजन संहिता १०३:१ में – हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और जो कुछ मुझ में है, उसके पवित्र नाम को धन्य कहे! हमे प्रभु को हमारे सारे हृदय से, हमारे प्राण और मन से चाहना हैं। हमने पवित्र–शास्त्रों में पढ़ा है कि याकूब ने उसके पुत्र के गले को लंबे समय तब पकड़ा और उसके साथ उसके पूरे हृदय से, प्राण और मन से रोया था। हमे भी रोना हैं और प्रभु परमेश्वर की स्तुति हमारे भीतर जो कुछ है उससे करना है यानी, अपने हृदय, प्राण और मन से। हम देखते हैं पवित्र–शास्त्रों में कि याकूब उसके जीवन परमेश्वर के प्यार और महान कार्यों को नहीं भूला। वह उसी स्थान पर गया जहाँ अब्राहाम और इसहाक ने प्रभु के लिए बलिदान चढ़ाया, उसने भी उसी स्थान पर बलिदान चढ़ाया और फिर उसके अंतिम यात्रा पर निकल पड़ा। हम पढ़े उत्पत्ति २१:३३ – तब अब्राहाम ने बेर्शेबा में झाऊ का एक वृक्ष लगाया, और वहां उसने यहोवा से, जो अनन्तकाल का परमेश्वर है प्रार्थना की। उत्पत्ति २६:२३–२५ – तब वह वहां से बेर्शेबा को गया। उसी रात यहोवा ने उसे दर्शन देकर कहा, "मैं तेरे पिता अब्राहाम का परमेश्वर हूँ। मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूं। मैं अपने दास अब्राहाम के कारण तुझे आशिष दूंगा, और तेरे वंश को बहुत बढ़ाऊंगा।" तब उसने वहां एक वेदी बनाई, और यहोवा से प्रार्थना की, तथा अपना तम्बू वहीं खड़ा किया, और इसहाक के दासों ने वहां एक कूआं खोदा। हम में सभी जो प्रभु से प्यार करते है परमेश्वर के चेले बनकर रहना हैं। इस संसार की हमारी यात्रा में हमारे जीवन के अंत के यात्रा तक। हम पढ़ते हैं भजन संहिता ५०:५ – "मेरे भक्तों को मेरे पास इकट्ठा करो, जिन्होंने बलिदान

चढ़ाकर मेरे साथ वाचा बांधी है।" अंत में, प्रभु उनके संतों को बुलाता है, जैसे उसने अब्राहाम, इसहाक को बुलाया; जैसे यूसुफ उसी जगह पर गया जहाँ बलिदान चढ़ाया गया और उसने परमेश्वर के साथ बांधे गए वाचा को पुनःस्थापित किया। इसी प्रकार हमारे जीवनों में भी हमे प्रभु के साथ बँधे रहना हैं हमारे जीवन के अंत के यात्रा तक। उसी प्रकार जैसे धर्मी और परमेश्वर का भय मानने वाले लोग प्रभु के लिए अंत तक परिश्रमी रहे हम हमारे भीतर वही गुण का प्यार, उत्साह और विश्वास रखना है जैसे कि अब्राहाम, इसहाक और यूसुफ में था, तब परमेश्वर अंत के समयों का घोषणा करता है जैसे दिया गया है वचन में "मेरे भक्तों को मेरे पास इकट्ठा करो, जिन्होंने बलिदान चढ़ाकर मेरे साथ वाचा बांधी है।" परमेश्वर कहता है "इन लोगों ने जीवन में सारे चीजों का त्याग किया उनके वाचा जो मेरे साथ है उसे पुनःस्थापित करने के लिए। पतरस येशु से कहता है "तेरा पिछा करने के लिए हमने सबको और सबकुछ इस संसार का छोड़ दिया। अब हमारा क्या?" येशु उत्तर देता है "अगर तुम प्रभु के लिए कुछ भी छोड़ते हो तुम दस गुना आशिषित होगे। अगर तुमने तुम्हारे परिवार को छोड़ा है, तुम्हारा परिवार तुमसे जोड़ा जाएगा। अगर तुमने तुम्हारा धन छोड़ा है, दुगना धन तुमसे जोड़ा जाएगा। "मेरे लोग जिन्होंने उनके परिवारों, माता–पिता, बेटों और बेटियों को मेरे लिए त्यागा है। उन सब को इकट्ठा करो उन्हे अब्राहाम, इसहाक और याकूब के साथ मेज पर बैठने का विशेषाधिकार मिलेगा।" पवित्र–शास्त्रों में हम भी जानते हैं कि प्रभु ने सारे घराने को इस्राएल में शादी के लिए निमंत्रित किया। लेकिन कोई भी इस्राएली उस शादी के घर में नहीं गए, इसलिए जब प्रभु आया और देखा कि शादी का घर रिक्त है। प्रभु ने पूछा "वें कहाँ हैं जिन्हे निमंत्रित किया गया है इस शादी में।" लोग कहते हैं "कोई नहीं आया है।" इसलिए प्रभु उनसे कहता है कि वें जाएँ और रास्ते में खड़े हो और सारे राहगिरों को निमंत्रित करे, इस प्रकार घर भर गया और शादी हुई। यही अंत के समयों में होनेवाला है। मसीह का विरोधी आने वाला है और उससे पहले परमेश्वर एप्रैम, मनश्शे, एलिय्याह को भेजेगा हमे सच्चाई दिखाने और मार्ग भी। यहां तक कि अंत समय के दौरान, प्रभु के बच्चों कि वृद्धि सभी पक्षों से होगी, इस दुनिया में। जैसे अब्राहाम का मतलब है संख्यावृद्धि करना, हम भी, इस दुनिया में संख्यावृद्धि होंगे, बढ़ेंगे और विकसित होंगे। जिस तरह यूहन्ना प्रभु येशु के लिए रास्ता बनाने के लिए इस दुनिया में भेजा गया था, उसी तरह प्रभु परमेश्वर हमें बचाने के लिए दुनिया

में उसकी आत्मा भेजेंगे। इस प्रकार यह सब जानते हुए, हमें प्रभु के लिए सावधान रहना चाहिए, ध्यान से और लगन से जीना चाहिए। प्रभु हमारे उस पर के विश्वास, भरोसा और आस्था को देखेगा। वह हमारे कार्यों को भी देखेगा और तब आशिष देगा। इस प्रकार अंत में, प्रभु अपने राज्य के लिए ऐसे लोगों को उठाएगा। दो लोग खेत मे काम कर रहे होंगे, एक ले लिया जाएगा। दो लोग बिस्तर पर होंगे, एक ले लिया जाएगा। हाँ, हम में से हर एक को व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर के दण्ड की आज्ञा का सामना करना पड़ेगा। कोई भी एक–दूसरे के लिए समर्थन नहीं कर सकते हैं। हर एक को व्यक्तिगत रूप से उसके न्याय के सिंहासन के सामने खड़े रहना है और हर एक को अपने कार्यों तथा कर्मों के अनुसार पुरस्कृत किया जाएगा। प्रकाशितवाक्य २२:१२ – देख, मैं शीघ्र आने वाला हूं। प्रत्येक मनुष्य को उस के कामों के अनुसार देने को प्रतिफल मेरे पास है।

हमारे प्रमाण–पत्र प्रभु परमेश्वर यीशु के हाथों में है। परमेश्वर, उसके स्वर्गीय राज्य तक कौन पहुँचेगा, यह तय करने का अधिकार किसी को भी नहीं दिया है। पुरुष पक्षपाती हैं, लेकिन परमेश्वर अपने फैसले में पक्षपाती कभी नहीं होता। पुरुष पदों के पीछे दौड़ते हैं, लेकिन परमेश्वर दिल को देखता है जिसके साथ पुरुषों ने इस दुनिया में उसके लिए काम पूरा किया है। हालांकि एक व्यक्ति कितना भी महान होगा, यहां तक कि यदि उनका एक बड़ा सेविकाय होगा, काफ़ी लोग उनके पीछे चलनेवाले होंगे, फिर भी, केवल परमेश्वर उसे प्रमाण–पत्र दे सकते हैं। कितने आत्माएँ उसके राज्य के लिए जीते, आपने इस संसार में प्रभु के लिए कैसे सेवा की, आप प्रभ ु के लिए कितने सिद्ध थे; यह सब देखकर हमारा प्रमाण–पत्र प्रभु परमेश्वर कि ओर से आएगा। परमेश्वर हमारे प्रमाण–पत्र को साथ लाएगा जब वह हमारा मुकुट लेकर आएगा। इसकी जानकारी कोई मनुष्य को अंत तक नहीं हैं, परन्तु केवल हमारा प्रभु परमेश्वर यह बात जानता हैं। परमेश्वर ने हमें बताया है की, ‟मैं आप के लिए कई मकाने तैयार करने जा रहा हूँ, और फिर मैं आऊँगा और स्वर्ग में आपके घर में आपको साथ ले जाऊँगा। हाँ, आज हम सब दौड़ में है, पर कौन जितेगा और कौन हारेगा, यह केवल परमेश्वर के हाथों में है। हम सब की यही इच्छा होना है, के हम परमेश्वर के साथ इस दौड़ में जीत जाए। इसलिए, याद रखें, परमेश्वर कहता है, ‟मैं अपने साथ मुकुट लाऊँगा हर एक के कार्यों के लिए।" पवित्र शास्त्र में, हम जानते हैं कि मिस्र में एक बार महान सूखा और अकाल हुआ; लोगों ने जो कुछ उनके पास था सब बेचकर समय समय पर अनाज खरीदा जीवित रहने के लिए। पर हम देखते

हैं की यूसुफ के परिवार को कुछ देना नहीं पड़ा कुछ खरीदने के लिए, बल्कि वे पैसे के बिना या कुछ भी बेचने के बिना उन्हें अपना सारा आपूर्ति मिल गया। यह अनुग्रह यूसुफ के परिवार पर क्यों था? यह केवल यूसुफ के कारण था, उसकी धार्मिकता, उसका परमेश्वर पर का विश्वास, क्योंकि वह सच्चाई से खड़ा रहा, और अपने जीवन में प्रलोभन में नहीं पड़ा, जिसके कारण उसके परिवार ने मुफ़्त अनाज का आनंद लिया और अपने भोजन पाने के लिए संघर्ष करना नहीं पड़ा। इस लिए यूसुफ का परिवार यूसुफ के कारण आशिषित हुआ। उत्पत्ति ४७:१२ – और यूसुफ ने अपने पिता और अपने भाइयों और अपने पिता के सारे घराने के लिए उनके बाल–बच्चों की गिनती के अनुसार भोजन–सामग्री आदि की व्यवस्था की। यहाँ हम देखते हैं, परमेश्वर का अनुग्रह यूसुफ के परिवार पर यूसुफ के कारण आया। पर आज, हम पर येशु का अनुग्रह हैं।

वह हमें अपना बच्चा या भाई, बहन या माता–पिता कहने में कभी शर्म नहीं करता। अंत समय के दौरान, हमें भी हमारे जीवन में ऐसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। हमारे भी जीवन में अकाल और सूखे का एक समय आ सकता है। लेकिन परमेश्वर के बच्चों का देखभाल किया जाएगा, क्योंकि येशु हमारा ध्यान रखेगा। येशु हमारे लिए क्रूस पर मरा, हमारे सभी पापों और शर्म को हमारे खातिर लेकर। यह हमारे लिए परमेश्वर का उपहार है और हमारे लिए उनका अनुग्रह है। इसका हमें अब एहसास नहीं होगा, लेकिन जब दुनिया अंधेरे और घोर अंधकार में जाने को शुरू होगा, तब हम, हम पर के परमेश्वर की कृपा को समझने में सक्षम हो जाएँगे। हम समझेंगे कैसे अन्यजातियाँ पीड़ित होंगे और कैसे परमेश्वर के बच्चें इन परिस्थितियों में भी आशिषित हो जाएँगे। इब्रानियों २:११ – क्योंकि पवित्र करने वाला और पवित्र होने वाले सब एक ही मूल से हैं, इसी कारण वह उन्हें भाई कहने से नहीं लजाता। क्योंकि प्रभु येशु का प्यार हम पर है वह हमें उसके बेटें और बेटियाँ, भाई और बहनें, माता और पिता बुलाने में शर्म नहीं करता है। यह केवल उनका प्रेम और करुणा हमपर होने के कारण, के हमें उनका कृपा प्राप्त होगा। यूसुफ की तरह जिसने अपने माता–पिता और भाइयों को स्वीकार करने में संकोच नहीं किया। श्रेष्ठगीत २:४ – वह मुझे भोज–गृह में ले आया है, और उसकी प्रेम की ध्वजा मुझ पर फहरा उठी। यह केवल इसलिए है क्योंकि येशु का प्रेम हम पर है, कि हम उसके दावत मेज तक पहुंच गए हैं, उनका प्यार और अनुग्रह केवल हमें उसके दावत मेज तक पहुंचा सकता हैं। हमें परमेश्वर को हमारे जीवन में पहला स्थान देना चाहिए;

हमें उससे कहना है, "आपकी इच्छा हमारे जीवन में पूरी होने दो।" हमें इस तरह का विश्वास और उस पर भरोसा रखना हैं। जैसे हमने यशायाह ६० में पढ़ा, के दुनिया के लोग भोजन और पानी के लिए संघर्ष करेंगे, लेकिन हमें, उसके बच्चों को, उनकी दावत की मेज पर आसानी से सब कुछ प्राप्त होगा। आज भी प्रभु परमेश्वर हमें अपना मन्ना हर रोज खिलाता है। हम पढ़े मत्ती ४:४ – पर उसने उत्तर दिया, "यह लिखा है, "मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा।" इस दुनिया के लोग आज भी सोंचते है, कि जीवन केवल खाना और पीना ही है। वह अपना वचन हमें देता है और हमारा मन्ना केवल उससे आता हैं। भजन संहिता ७८:२३–२५ कहता है – फिर भी उसने आकाश के बादलों को आज्ञा दी, और स्वर्ग के द्वार खोले। उसने उनके खाने के लिए मन्ना बरसाया, और स्वर्ग से अन्न दिया। मनुष्यों ने स्वर्गूतों की रोटी खाई; उसने उनके लिए बहुतायत से भोजन भेजा। यह परमेश्वर का प्रेम है उनके लोगों के लिए। वह कभी नहीं बदलेगा। वह कल, आज और सदैव एक सा हैं। जो लोग बड़ा दान या छोटा दान देते हैं, उसका प्यार समान हैं, वह पक्षपात करने वाला परमेश्वर नहीं परन्तु एक अपक्षपाती परमेश्वर है। इस प्रकार हमें लोगों के बीच में कभी अंतर नहीं करना चाहिए। हम जानते है कैसे पवित्र शास्त्र मे, लोगों ने परमेश्वर से आकर कहा, "आपके नाम से हमने दुष्टआत्माओं को भगाया, हमने बहुतों को आपके नाम से वचन सुनाया, हमारे अच्छे कामों कि यह सब सूचियाँ हैं जो हमने आप के लिए किया है। पर अंत में प्रभु परमेश्वर कहेगा, "मैं तुम्हें नहीं जानता। तुमने अपने नाम की महिमा के लिए सब कुछ किया है और इस तरह तुम को इस दुनिया में उसी के लिए प्रतिफल मिला है।" परमेश्वर का मार्ग बहुत सक्रा है। येशु ने कहा, "जैसे ऊंट सुई की आंख के भीतर से नहीं जा सकती, एक मनुष्य को परमेश्वर के राज्य के भीतर जाना कठिन हैं। इस प्रकार इस दुनिया में हर घुटने को प्रभु परमेश्वर के सामने झुकना है। हमारा अभिलेख सब परमेश्वर के साथ हैं। स्मरण करों लूत कि पत्नी को, उसने दुनिया से अधिक प्रेम किया और जो धन उसमें था। हालांकि परमेश्वर ने उसे विनाश से बचने के लिए एक मौका दिया, उसने पीछे मुड़ा यह देखने के लिए कि उसने क्या पीछे छोड़ दिया था और वह एक नमक के स्तंभ में बदल गई। हमें स्मरण रखना है – पहले हम प्रभु को तलाश करे, तो ये सब वस्तुएं हमारे जीवन में जोड़ दिए जाएँगे, और हम प्रभु परमेश्वर के लिए आशिषित लोग होंगे। पवित्र शास्त्र कहता है, मत्ती

६:३३ – परन्तु तुम पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज में लगे रहो तो ये सब वस्तुएं तुम्हें दे दी जाएंगी। फिलिप्पियों ४:१९ – मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित येशु में है तुम्हारी प्रत्येक आवश्यकता पूरी करेगा। हाँ, हम केवल परमेश्वर की कृपा और दया से प्रभु और उसके राज्य की तलाश कर सकते हैं, अपने दम पर हमारी कमजोरी के साथ हम परमेश्वर की तलाश कभी नहीं कर सकते हैं। प्रकाशितवाक्य २:११ – जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है। जो जय पाए, उसे दूसरी मृत्यु से कोई हानि न होगी। हमारा परमेश्वर किसी को मजबूर कभी नहीं करता उसके पीछे चलने के लिए, वह हमें हमारी मर्ज़ी पर छोड़ देता है उसके पीछे चलने के लिए। उसने हमें कान दिए हैं सुनने के लिए, इसलिए हम सुने और वचन को स्वीकार करें। जैसे यूसुफ के परिवार ने अनुग्रह पाया उसके कारण, इसी तरह हम भी येशु के कारण प्रभु परमेश्वर के सामने अनुग्रह पाएँगे और कोई कमी हमारे जीवन में नहीं होंगी।

यह संदेश हमारे जीवनों में आशीष लाए।

पास्टर सरोजा म.